Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु MTBMLE की अवधारणा पर आधारित बाल मन अधिगम

डॉ नीलू दुबे
शोधार्थी
शिक्षा अध्ययन शाला
सम्राट विक्रमादित्य यूनिवर्सिटी उज्जैन
एवं
डॉ राजीव पंड्या
शोध निदेशक
प्राचार्य
शासकीय स्नातकोत्तर शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन

सारांश

MTBMLE (Mother Tongue based multilingual Education) अर्थात मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख बिंदु एवं विशिष्ट शिक्षण पद्धती है। इसके अनुसार 3से 8 वर्ष तक के बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा उसकी मातृभाषा में देना और 8 वर्ष के बाद धीरे-धीरे उसको कोई भी दो अन्य भाषाएं जैसे क्षेत्रीय, हिंदी या अंग्रेजी सिखाए जाने का प्रावधान है। यूनेस्को एवं यूनिसेफ के अध्ययन से भी यह बात सामने आई है की 8 वर्ष तक के बच्चों को यदि उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाती है तो परिणाम अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक आते हैं 8 वर्ष तक की उम्र के बच्चों का मातृभाषा में अधिगम जल्दी और स्थाई होता है यह एक समावेशी शिक्षा प्रणाली है जिससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है और वह रटंत विद्या से दूर होता है। प्रस्तुत लेख में बहचपन की स्मृति की समीक्षा करते हुए अवधारणा को विस्तृत रूप में समझाया गया है।

तकनीकी शब्द

1. UNESCO_ United Nations Educational Scientific Cultural Organizations.
2. UNICEF_United Nations International Children Emergency Fund
3. मातृभाषा - परिवार में बोली जाने वाली भाषा बच्चा अपनी मां से सीखना है
4. क्षेत्रीय भाषाएं - एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति और पहचान के रूप में अधिकांश आबादी द्वारा बोली जाने वाली भाषाएं
5. बालमन अधिगम - जब बालक किसी बात को मन से आत्मसात करके सीखना है

प्रस्तावना

जैसा कि कहा गया है की बालक की प्रथम गुरु मां होती है अतः वह अपनी मां के द्वारा सिखाई गई बातों को बहुत आसानी से सीखना है चाहे यह भाषा बोली गई हो या सांकेतिक हो जब बच्चा थोड़ा बड़ा होता है तो परिवार और समाज में वह जिस परिवेश में रहता है उसके अनुसार भाषा सीखता है और जब स्कूल में भी शिक्षक बच्चों को उसी भाषा में सिखाते हैं तो बच्चा अपने शिक्षक के साथ एक जुड़ाव महसूस करता है और एक परिवार के सदस्य की भांति वह शिक्षक के द्वारा सिखाई गई शिक्षा को आत्म सात कर लेता है यही बालमन अधिगम है। इसी मर्म को चरितार्थ करते हुए एक पूर्व स्मृति को लेख में प्रस्तुत किया गया है।

एक पूर्व स्मृति

यह बात 1974-75 की है जब मैं अपने मोहल्ले की स्कूल में बगैर दाखिला लिए ही किताबें कॉपी बस्ता लेकर यूं ही पढ़ने चली जाती थी और मेरे जैसी और भी लड़कियां आती थी जब कक्षा पहली में हाल में नए बच्चों को टाट पट्टी पर बिठा दिया जाता और बीच में कुर्सी टेबल लगाकर बहन जी बैठी रहती बहन जी रजिस्टर लेकर आई तो उन्होंने हाजिरी ली तब पता चला की बहुत सारे बच्चे बगैर नाम लिखे हुए ही कक्षा में बैठे हुए हैं इनका क्या उद्देश्य था बस बच्चे स्कूल में बैठना सीखें कुछ समय पश्चात गेंदा बहन जी ने अनार आम का बोर्ड पर लिखा और बच्चों से लिखने के लिए कहा और बहन जी घूम-घूम कर देखने लगी मेरे पास आकर रुकी और बोली **"जा मोड़ी तो बहुत होशियार है ए ने तो सब लिख लओ"** फिर उन्होंने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और बोली **"तुमाओ नाव का है"** मैंने मुंह में उंगली डालकर शरमाते हुए बोला नीलू उन्होंने फटाफट एक फॉर्म में नीलू लिखकर बोला **"तुम्हारे घर में कौ कौ है"** क्योंकि मैं नानी के यहाँ रहती थी तो मैं बताना चालू कर दिया अम्मा दद्दा मामा मौसी तो उन्होंने कहा **"जो फार्म ले जाओ मामा को दे दिओ और कहियो की जो फॉर्म भर दें।"** इस समय दूसरे सेक्शन में एक महाराष्ट्रीयन मैडम थी वह शुद्ध खड़ी बोली बोलती थी उनको बुंदेलखंडी नहीं आती थी तो लड़कियां उनसे डरती थी और सब गेंदा बहन जी की क्लास में पढ़ना चाहती थी।

थोड़ा और समय बिता गेंदा बहन जी जब कोई पाठ पढ़ती तो हमारे घर के उदाहरण देता कि तुम्हारे घर में अम्मा गोल-गोल रोटी बनाती है ना वही गोल है। त्रिभुज मंदिर का जो झंडा है वह त्रिभुज जैसा है। जिस बोर्ड पर हम लिख रहे हैं वह आयत जैसा है, और बुंदेलखंडी में बात करते-करते वह हमें बहुत सारी घर की बातें बताती और पाठ पढ़ाती जाती जब हानि लाभ के सवाल करवाती तो वह हमसे घर से सामान लेकर आने का रहती एक बच्ची घर से सामान लाती दूसरी बच्ची घर से पैसा लेकर आने का कहती और फिर वह सामान खरीदने कभी कम में समान खरीदवाती कभी ज्यादा में सामान खरीदवाती और वह इस तरह से लाभ हानि के सवाल सिखाया करती थी कभी-कभी बहन जी हमारे घर आकर हमारी नानी के साथ स्वेटर भी बनाया करती थी कुछ अपनी डिजाइन सिखाती कुछ उनसे सीखती और साथ में हमारी पढ़ाई के बारे में भी चर्चा करती है इस तरह से वह हम सब

लड़कियों के साथ बहुत मन से जुड़ गई थी लेकिन अब मैंने देखा की कुछ समय बाद बहन जी हम लोगों से बुंदेलखंडी में बात नहीं करती थी अब वह हमें खड़ी बोली सिखा रही थी जैसे वह हमें सिखाती

तुम्हारा नाम क्या है

पापा का नाम क्या है

पापा के नाम के आगे पहले श्री लगते हैं

मम्मी के नाम के पहले श्रीमती लगते हैं

तुम कौन सी क्लास में पढ़ती हो तुम कौन सी स्कूल में पढ़ती हो कितने भाई बहन हैं कौन सी चीज तुमको अच्छी लगती कौन सा खाना अच्छा लगता कौन सा खेल अच्छा लगता घर में अपनी मम्मी की कौन सी बात सबसे अच्छी लगती और इस तरह गेंदा बहन जी सब बच्चों का खुद से परिचय कर रही थी कभी-कभी बहन जी हमसे शुद्ध लेख ल कई लिखवाती और इस तरह से छोटी-छोटी बातों के द्वारा वह क्लास के बच्चों को बहुत सारा सिखा देती। जो हम कभी नहीं भूल पाए हमारे समय के लोगों की हिंदी की राइटिंग बहुत अच्छी हुआ करती थी आज के बच्चे तो जल्दबाजी के युग में जी रहे हैं उनका राइटिंग पर ध्यान नहीं जाता यदि हम इस पूरे स्मृति चिंतन का कर देखें तो यही था बालमन अधिगम जो लड़कियां अपनी प्यारी गेंदा बहन जी से स्थाई रूप से सीख रही थी

स्मृति चिंतन से निकलकर आने वाली कुछ महत्वपूर्ण बातें

1. मातृभाषा बुंदेली में बात करने से लड़कियां ज्यादा बहन जी से मां से जुड़ गई थी और वह उनकी एक-एक बात मानती थी इस प्रकार उन में स्व अनुशासन की भावना भी आ गई थी।
2. मातृभाषा में बात करने से बच्चियों के मन में किसी प्रकार की झिझक नहीं होती वह खुलकर बहन जी से सवाल पूछ लेती थी।
3. बहन जी गणित पढ़ा नहीं रही थी वह गणित सिखा रही थी जो उनके आसपास के उदाहरण देकर स्थाई अधिगम का कारण बनते थे।
4. गेंदा बहन की बच्चियों के घरों में जाकर उनके साथ कुछ समय बिताती थी घर के सदस्यों के साथ मिलती-जुलती थी जिससे बच्चियों उनके साथ आत्मीयता से जुड़ी थी उन्होंने अलग-अलग बच्चियों को अलग-अलग विधाओं में पारंगत कर रखा था कुछ बहुत अच्छा लिखती थी कुछ बहुत अच्छा बोलती थी कुछ बहुत अच्छी गायिका थी पढ़ने लिखने के साथ-साथ वह उन्हें मूल्य आधारित शिक्षा भी सिखाती थी
5. थोड़े दिनों के बाद बहन जी ने लड़कियों को मातृभाषा से आगे शुद्ध हिंदी भाषा सीखना शुरू कर दिया था अर्थात सरल से कठिन की ओर ले जाकर भाषार सिखा रही थी

हमारे समय में अंग्रेजी भाषा कक्षा छठी में ही सिखाई जाती थी पांचवी तक हम हिंदी माध्यम में ही पढ़ते थे तो सभी बच्चियों को मातृभाषा और हिंदी भाषा का ही ज्ञान दिया जाता था किंतु वह ज्ञान रटंत विद्या पर आधारित नहीं था गहराई से मन में उतरनेवाला बाल मन स्थाई अधिगम था।

वर्तमान में MTBMLE अर्थात मदर टंग बेस्ड मल्टीलिंगुअल एजुकेशन जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक अहम बिंदु है ने हमारे पुराने ज्ञान की शिक्षण पद्धतियों को नए ज्ञान जैसे डिजिटल

मीडिया A. I. आदि के साथ जोड़कर सीखने की बात की है जो प्राचीन और नई शिक्षण पद्धतियों का अद्भुत संयोग होगा. इससे बच्चों की संज्ञानात्मक एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होता है और संस्कृति संरक्षण होता है

MTBMLE के विकास हेतु कुछ सुझाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन हेतु स्थानीय स्तर पर मातृभाषा के जानकार लोगों को स्कूलों से जोड़ा जाए रिटायर्ड शिक्षकों की योग्यताओं का लाभ भी लिया जाए ऐसी शिक्षकों को स्कूल का मैटर बनाया जाए ताकि वह अपने आप को एक की ना समझे और हमेशा नई क्षमता के साथ बच्चों के साथ रहे

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन हेतु स्थानीय स्तर पर मातृभाषा के जानकार लोगों को स्कूलों से जोड़ा जाए रिटायर्ड शिक्षकों की योग्यताओं का लाभ भी लिया जाए ऐसी शिक्षकों को स्कूल का मैटर बनाया जाए ताकि वह अपने आप को एक की ना समझे और हमेशा नई क्षमता के साथ बच्चों के साथ रहे

उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और राजस्थान जैसे राज्यों में इस दिशा में नई पहल की गई है वह स्थानीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण सामग्री तैयार की जा रही है मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा केवल भाषा सीखने के बारे में नहीं है बल्कि सीखने के लिए समावेशी वातावरण को बनाने के बारे में है जिससे सभी बच्चों को अपनी क्षमता को उजागर करने का समान अवसर मिलता

Reference

1. https://unesco.com MTBMLE: mother tongue based multilingual education
2. गुलाटी एस "मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा क्यों लाजमी"? https://www.eklavya.in
3. "मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा क्यों" https://educationculturandsociety.wordpress.com/
4. Mother tongue based multilingual education https://www.slideshare.net

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL